

## पद १६६

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

साध साधन संग होरी। सखी मै खेलूं निगम विचार फागन  
में॥ध्रु॥ बहुत जनमकृत पूर्वसुकृत तैं नित साधन करचारी। गुरु  
बसंत प्रेम ऋतु आयो तीन देह बलहारी। गयी मै पूछूं निगम विचार  
फागन में॥१॥ केसर सत्व ज्ञान रंग कीन्ही वृत्तिनैं भरी पिचकारी।  
स्वस्वरूप पीतम मुख मारी तब आतमको ही बिसारी॥२॥ भ्रमहि  
गुलाल लाल उडछाये, महावाक्यनकी गारी। स्वानुभूति सखियन  
मिल खेलत समरस धूम मचोरी॥३॥ ज्ञानरूप मार्ताण्डप्रभु संग  
खेलत खेलत हारी। निर्विकल्प सुख स्वस्वरूप मैं आपही मौन  
भई री॥४॥